Vol 2 Issue 10 April 2013

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

GoldenResearch Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 10, April. 2013
ISSN:-2231-5063

Available online at www.aygrt.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

ग्रन्थों में उपलब्ध वाद्यों का वर्गीकरण

श्रीकान्त शुक्ल

(प्रबन्ध निदेशक), सरस्वती म्यूज़िकल क्लासेज़, लखनऊ।

सारांशः

संगीत शब्द की यदि व्याख्या करें, तो संगीत तीन अलग–अलग विधाओं या कलाओं का एक शब्द है, अर्थात गायन, वादन और नृत्य इन त्रिमूर्तियों का समवेत या हारमोनाइज़्ड शब्द 'संगीत' है। जिसकी संगीतात्मक धवनि स्वर का और गति लय का प्रतिनिधितत्व करती है। इन्हीं दो मजबूत स्तम्भों पर संगीत कला रूपी भवन का निर्माण प्राचीनकाल से लेकर आजतक होता चला आ रहा है, इन स्वर और लय को व्यक्त करने वाले उपकरण को आधुनिक संगीत में वाद्य और प्राचीन गांधर्व में आतोद्य की संज्ञा दी गयी।

प्रस्तावना :–

मानसोल्लास संगीत ग्रन्थ में उल्लखित हैः–

''वाद्ये न राजते गीतं न नृत्यं
वाद्य–वर्जितम् तस्माद् वाद्यं प्रधानस्यात'' ।

अर्थात वाद्य के बिना न गीत सुशोभित होता है और न ही नृत्य। वैसे भी संगीत कला की कोई भी प्रस्तुति बिना लय के नहीं की जा सकती और लय का प्रतिनिधित्व वाद्य करता है। अतएव प्राचीनकाल से वर्तमान काल तक वाद्यों के अभाव में गीत–संगीत इतना विकसित नहीं हो पाता। इसलिए विभिन्न प्रकार के वाद्यों के प्रयोग का विधान, आज से नहीं वरन् सहस्रों वर्षों से संगीत में स्वीकार किया गया है।

हमारे देश में वाद्यों की संख्या इतनी विस्तृत है कि इनका वर्गीकरण करने की आवश्यकता हुई। वाद्यों के ऐतिहासिक रूप को जानने के लिए महत्वपूर्ण तथ्य है उनका वर्गीकरण। विभिन्न प्रकार के वाद्यों का स्वरूप, उनकी वादन–प्रक्रिया आदि का विशद अध्ययन भारत में प्राचीनकाल से होता चला आ रहा है। इसी अध्ययन का एक विशिष्ट अंग है– वाद्यों का वर्गीकरण। वर्गीकरण मे वाद्यों को न केवल उचित नाम देते हैं, बल्कि उस वर्ग के अन्य वाद्यों के साथ उसके सम्बन्धों को भी दृष्टिगत करते हैं।

एक प्रकार की बहुत सी वस्तुएं जब एक साथ हमारे सामने आती हैं, तो मानव प्रकृति उसको अपने अनुसार वर्गीकृत करने की होती हैं। वर्गीकरण की सहायता से हम किसी विषय के विविध अंगोपांगों का ज्ञान अधिक स्पष्ट, सूक्ष्म और तुलनात्मक रूप में प्राप्त कर सकते हैं।

यद्यपि भारतीय संगीत में प्रत्येक स्थल पर प्रायः कण्ठ को ही प्रधानता दी जाती है तथापि संगीत के शास्त्रीय ग्रन्थों का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि सांगीतिक व्यवस्था और उसकी सुरक्षा तथा उसके विकास मे वाद्यों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

भारतीय संगीत मुख्यतः गायन पर आधारित है। गायन की प्रधानता होने से ही हमें वैदिक काल से वाद्यों का समुचित प्रयोग मिलता है। गायन पर आधारित होने के कारण उन वाद्यों का प्रयोग अधिक किया जाता है, जिनकी ध्वनि मानव कंठ से अधिक मिलती–जुलती है। इसलिए प्राचीन ग्रन्थों में मानव कण्ठ को भी वाद्य की संज्ञा दी गयी है।

'संसार में भारत ही ऐसा प्रथम देश है जहाँ सहस्रों वर्ष पूर्व संगीत वाद्यों का विधिवत वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है। पूर्ववर्ती वैदिक कालीन एवं उनके परवर्ती साहित्य के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि यहाँ चारों वर्ग के वाद्य विपुल संख्या में उपलब्ध थे। यद्यपि वैदिककाल में वाद्यों का वर्गीकरण नहीं मिलता, किन्तु इन चारों प्रकार के वाद्यों का उल्लेख अवश्य मिलता है।'

प्राचीन युग में विकसित वाद्यों के प्रकारों को देखते हुए उनका वर्गीकरण सर्वथा उचित तथा पर्याप्त प्रतीत होता है–

उन्होंने लिखा है–

''ततं चैवावनद्धं च घनं सुषिरमेव च
चतुर्विधं तु विज्ञेयमातोद्यं लक्षणान्वितम् ।।1।।''

इन चारों वाद्यों का लक्षण स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा हैः–

'ततं तन्त्रीकृतं ज्ञेयमवनद्धं तु पौष्करम्
घनं तालस्तु विज्ञेयु सुषिरों वंश उच्यते' ।।2।।

Title :ग्रन्थों में उपलब्ध वाद्यों का वर्गीकरण
Source:Golden Research Thoughts [2231-5063] श्रीकान्त शुक्ल yr:2013 vol:2 iss:10

अर्थात् इस प्रकार तत्, अवनद्ध, घन एवं सुषिर क्रमशः तन्त्री वाद्य, पुष्कर वाद्य, ताल वाद्य एवं वंशी वाद्य हैं। महर्षि भरत के अनुसार उस इन समय समस्त वाद्यों को आतोद्य भी कहते थे।

इस दृष्टि से देखा जाय तो महर्षि भरत ने वाद्यों के पाँच प्रकार माने हैं, जिनका स्वरूप आगे की तालिका में देखा जा सकता हैः–

आतोद्य–विधान

तन्त्रीकृतातो — सुषिर वाद्य — अवनद्ध वाद्य — घन

कण्ठ तन्त्री – दारवी वीणाएँ

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि तन्त्रीकृतातोद्य सर्वाधिक मुख्य है। यही तन्त्रीकृतातोद्य समस्त वाद्यों का आश्रयी हुआ और बाद में यही स्वर ताल पदात्मक के रूप में गान्धर्व नाम से प्रचलित हुआ।

स्वरूप की दृष्टि से भारतीय वाद्यों को चार वर्गों में विभाजित किया गया है। इन चार प्रकारों के नाम हैं– तत्, सुषिर, घन और अवनद्ध।

तत् यानि तंतु वाद्य जिनमें तार का प्रयोग होता है या जिसमें तार को छेड़कर ध्वनि उत्पन्न करते हैं, तत् वाद्य कहलाते हैं। आनद्ध या अवनद्ध वाद्य– जिन वाद्यों में चमड़ा मढ़ा हुआ हो, तथा जिसपर आघात करने से ध्वनि उत्पन्न होती हो, घन वाद्य यानी ठोस धातु से बने वाद्य जिनके दो भागो में आपसी टकराव द्वारा या एक भाग में दूसरी वस्तु के आघात द्वारा ध्वनि उत्पन्न होती हो। सुषिर वाद्य अर्थात ऐसे वाद्य जिनमें वायु के घर्षण द्वारा ध्वनि उत्पन्न होती हो, सुषिर वाद्य कहलाते हैं।

तत् एवं सुषिर वाद्यों का कार्य जहाँ गीत का उत्पादन और अनुकरण है, वहीं तबला पखावज आदि अवनद्ध वाद्यों का कार्य गीत का उपरंजन एवं लय प्रदर्शित करने का है एवं घन वाद्यों का कार्य लय की दृष्टि से गीत और वादन का मापन है घन वाद्य गीत का अनुकरण भी करते हैं।

महर्षि भरत द्वारा निर्धारित वाद्यों का चतुर्विध वर्गीकरण तथा उनके दिए हुए नामों को भी अनेक परवर्ती आचार्यों ने स्वीकार किया है।

बौद्ध साहित्य में तत्, वितत्, घन तथा सुषिर इन चतुर्विध वाद्यों का प्रचुर उल्लेख किया गया है। पाणिनी के अष्टाध्यायी में वृन्दावन के लिए तूर्य शब्द का प्रयोग किया गया है।

संगीतोपनिषत्सारोद्धार में आहत और अनाहत दण्ड और हाथ के आघात से बजने वाले, वायु के आघात से बजने वाले इस प्रकार के पाँच शब्दों का प्रयोग किया गया है–

''आहतोऽनाहतश्चैव दाण्डाहत कराहतौ
वाताहतश्चेत्यथवा पंचशब्दा उदीरिता ।।''

संगीत चूड़ामणि में इन पंचविधिनाद के लिए 'पंचमहाशब्द संज्ञा' का प्रयोग किया गया है। नारदीय शिक्षा में 'पंचमहावाद्यानि' का प्रयोग किया गया है। इनमें से एक ईश्वर निर्मित नैसर्गिक है। अन्य चार प्रकार मनुष्य निर्मित हैं। इसमें कण्ठ को भी वाद्यों के अन्तर्गत लिया गया है। इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार किया गया है–

'ततं च तन्त्रितं विद्यात् विततं मुरवादनम् ।
घनं च कांस्यतालादितु सुषिरं वायुपूरितम् ।।'

अर्थात् तत् तन्त्रित होते हैं, वितत् मुरवादन वाले होते हैं, घन कांस्यताल आदि और सुषिर वायुपूरित होते हैं।

भिन्न भिन्न मतों के अनुसार वाद्य पाँच, चार अथवा तीन प्रकार के माने गए हैं। किन्तु आचार्य कोहल ने वाद्यों के पांच प्रकार के माने है–

'पंच्ध्या च चतुर्भा च त्रिविधं च मते मते
कोहलस्य मते ख्यातं पच्चध वाध्मेत च ।।'

दत्तिल मुनि ने वाद्यों के चार भेद स्वीकार किये हैंः–

1. आनद्ध 2. तत् 3. घन 4. सुषिर

दत्तिल मुनि द्वारा आनद्ध संज्ञा का प्रयोग अवनद्ध के स्थान पर किया गया है।

नारद मुनि ने वाद्यों के तीन ही वर्ग बताए हैं–

1.आनद्ध 2.तत् 3.घन

नारदमते चार्मणं तन्त्रिक घनं त्रिधा वाद्य लक्षणम् ।

नारद मुनि ने अपने वर्गीकरण में सुषिर वर्ग का उल्लेख नहीं किया है और अवनद्ध के स्थान पर 'चर्माण' संज्ञा का प्रयोग किया है।

'वाद्यों के वर्गीकरण के लगभग दो हजार वर्षों के इतिहास में केवल दो परिवर्तन विशेष रूप से परिलक्षित होते हैं। इनमें से प्रथम है, वितत शब्द का प्रयोग, जो अवनद्ध के स्थान पर हुआ है तथा दूसरा ततानद्ध नाम का नया वर्गीकरण।'

वितत् शब्द का प्रयोग तानसेन तथा उनके बाद के कलाकारों द्वारा विशेष रूप से उल्लिखित किया गया है। तानसेन ने तत्, वितत, घन, सुषिर नाम से

DSpace™

वाद्यों के वर्गीकरण का कई स्थानों पर उल्लेख किया है–

'तत् को पहिले कहत, वितत को दूजो जान।
तीजो घन चौथे सिखर, तानसेन परनाम ।।'

भरत के पश्चात लगभग सभी ग्रन्थकारों ने वाद्यों को चतुर्विध वाद्यों के अर्न्तगत ही वर्गीकृत किया है। सबसे प्राचीन द्रविड़ भाषा में वाद्य को 'कुखी' कहा गया है। इसका विस्तृत वर्णन 'संगम साहित्य' में मिलता है। कुखी का साहित्यिक अर्थ है, एक प्रकार का औजार। संगीत के सन्दर्भ में यह वाद्य का रूप है।

अभिनव गुप्त ने नाटयशास्त्र की टीका में तत्, अवनद्ध, एवं घन शब्दों की व्याख्या करते हुए बताया है कि तन्त्रियों के कारण तन्त्र, चर्मबन्धन के कारण अवनद्ध एवं ताल वाद्य की सुस्पष्टता, सघनता एवं सुन्दरता को चिरस्थायी बनाने के लिए घन वाद्य विशेष की संज्ञा हुई। सुषिर शब्द का अर्थ छिद्रवाला या फूंकमारकर बजाया जाने वाला बताया।

सोमेश्वर ने मानसोल्लास में वाद्यों की उपयोगिता के आधार पर वर्गीकरण करने की ओर संकेत किया है। इनके अनुसार पहला पृथक् वाद्य, दूसरा गीत संगत, तीसरा नृत्यानुग चौथा गीतनृत्यक वाद्य।

सोमेश्वर के अनुसार वाद्यों का चतुर्विध वर्गीकरण:–

ततं च विततं चैव घनं सुषिरमेव च।
चतुर्विधमिदं वाद्यं तस्य वक्ष्यामि लक्षणम्।।

संगीत शास्त्र में वाद्य शब्द का प्रयोग तीन सन्दर्भों में उपलब्ध होता है–

1– वाद्य शरीर (instrument) 2– अर्थ (content) अर्थात् वाद्य पर जो चीज बज रही है, तथा 3– वाद्य प्रविधि (technique) अर्थात् वादन–विधा के लिए इसका प्रयोग किया गया है।

महर्षि भरत द्वारा निर्धारित वाद्यों के चतुर्विध वर्गीकरण को आचार्य शारंगदेव ने भी स्वीकार किया है। शारंगदेव ने वाद्य को 'शिवरूप' माना है, उसी वाद्य में से वाणी निकली जिसमें स्वर–लय आदि विद्यमान हैं।

''पक्षे शिवं कल्याण रूप वाद्य नौमि स्तोमि।''

शारंगदेव ने तत्, सुषिर, अवनद्ध और घन ये चार प्रकार के वाद्य बताए हैं। इन्हीं चार प्रकार के वाद्यों से गीत उपरंजित होता है। वाद्यों के संगीतात्मक दृष्टि से उपयोग को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि तत् और सुषिर वाद्य श्रुति स्वर आदि को प्रकट करते हैं। अवनद्ध गीत को अनुरंजित करते है एवं घन से मान या गणना की जाती है।

पार्श्व देव ने संगीतसमयसार में अपने पूर्ववर्ती ग्रन्थकारों के समान चतुर्विध वाद्य–तत्, सुषिर, अवनद्ध और घन कहा है।

वाद्य–विद्याविशारदों ने तीन प्रकार के वाद्य–शुष्क, गीतानुग और तन्त्रानुग कहा है, गति नृत्य रहित वाद्य को शुष्क कहा गया है। पार्श्व देव ने वाद्य वर्गीकरण के लिए अन्य आधार बिन्दुओं की ओर संकेत किया है, जैसे– एक हाथ से, दोनों हाथ से, कोण से हाथ की अंगुलियों से तथा फूंक के आधार पर, क्रिया भेद, बाजभेद, वीणाभेद, और तन्त्री संख्या भेद के कारण अन्य प्रकार भी बताएं हैं।
सुधाकलश ने संगीतोपनिषत्सारोद्धार में वाद्यों के चार प्रकार का उल्लेख किया है तथा अवनद्ध के स्थान पर आनद्ध का प्रयोग किया है।

ततं वीणादिकं वाद्यं तालप्रभृतिकं घनं
वंशादिकं तु शु(सु)षिरमानद्धं मुरजादिकम्।

सुधाकलश ने अन्य मत बताते हुए कहा है–कुछ तीन प्रकार के वाद्य मानते हैं–

1.आंक्य 2. आलिंग्य 3. ऊर्ध्वक तथा कुछ पाँच प्रकार के वाद्य मानते हैं–

2. 1. पुंक 2.आपुट 3.ताल 4.गात्र 5. यन्त्र।

भरत ने आक्य, आलिंग्य, ऊर्ध्वक को मृदंग वाद्य विशेष के सन्दर्भ में प्रयोग किया है।
आधुनिक संगीत विद्वानों में श्री गोस्वामी ने भारतीय वाद्यों का उल्लेख करते हुए भारतीय वाद्यों को पाँच भागों में विभाजित किया है–

1. तत् 2.वितत 3. सुषिर 4. अवनद्ध 5. घन

परन्तु इस वर्गीकरण का कोई शास्त्रोक्त आधार नहीं होने के कारण इसे अमान्य कर दिया गया है।
'स्वामी प्रज्ञानानन्द ने अपनी पुस्तक 'द हिस्टारिकल डेवलपमेन्ट ऑफ इण्डियन म्यूजिक' में लिखा है कि भारतीय वाद्यों को चार वर्गों में वर्गीकरण किया जा सकता है–

1.तत् (तन्त्री वाद्य) 2. वितत् (चमड़े से मढ़े) 3. घन 4. सुषिर

इस प्रकार स्वामी प्रज्ञानानन्द ने वितत् को अवनद्ध वाद्य के रूप में माना है। प्रो0 पी0 साम्बमूर्ति ने विभिन्न द्रष्टिकोणों से संगीत वाद्यों को बीस वर्गों में वर्गीकृत किया है, जिसमें भरतोक्त एवं पाश्चात्य वर्गीकरण का भी संकलन किया गया है।

इस प्रकार उत्तर भारतीय वाद्यों के वर्गीकरण में विभिन्न विद्वानों ने अपने भिन्न–भिन्न मत प्रस्तुत किये हैं, किन्तु प्राचीन काल से अब तक वाद्यों के रूपों में अनेक परिवर्तन हुए है तथा होते आ रहे हैं।

संदर्भ

1.संगीतकला विहार–09 / 2011 पृष्ठ संख्या–14, लेख–वाद्य वर्गीकरण का मूल स्रोत महर्षि भरत कृत आतोद्य विधान, डॉ0 महारानी शर्मा।
2.डॉ. अंजना भार्गव, भारतीय संगीत शास्त्र में वाद्यों का चिन्तन, पृष्ठ संख्या–45–51।
3.विमला मुसलागांवकर, भारतीय संगीत शास्त्र का दर्शनशास्त्र अनुशीलन, पृ. 348।
4.महर्षि भरत, अभिनव टीका सहित, नाट्यशास्त्र, अध्याय 28, श्लोक संख्या 1–2 ।
5.डॉ. लाल मणि मिश्र, भारतीय संगीत वाद्य, पृष्ठ संख्या–13–14।
6.डॉ. महारानी शर्मा, संगीत कला विहार, सितम्बर 2011, पृष्ठ संख्या–14।
7.आचार्य बृहस्पति, संगीत चिन्तामणि, भाग–दो, पृष्ठ संख्या–30।
8.डॉ. मनोहर भालचन्द्रराव मराठे, ताल वाद्य शास्त्र, खण्ड ब–निबन्ध, पृष्ठ संख्या–32।
9.सुधाकलश–संगीतोपनिषत्सारोद्धार, पृष्ठ संख्या–75, श्लोक संख्या–5।
10.रामकृष्ण कवि, भरत कोश, पृष्ठ संख्या 599।
11.भरत कोश, संगीत चूड़ामणि, बड़ौदा संस्करण, पृष्ठ संख्या–69।
12.डॉ.महारानी शर्मा, संगीत कला विहार, सितम्बर 2011, पृष्ठ संख्या–17।
13.बी.सी.देव, जरनल ऑफ द इण्डियन म्यूजिकोलॉजिकल सोसाइटी, वाल्यूम–4, जनवरी–मार्च 1973, पृष्ठ संख्या–34।
14.सुधा कलश, संगीतोपनिषत्सारोद्धार, चतुर्थ अध्याय, श्लोक संख्या 2–4।
15.श्री ओ. गोस्वामी, द स्टोरी ऑफ इण्डियन म्यूजिक, पृष्ठ–292।
16.स्वामी प्रज्ञानानन्द, द हिस्टॉरिकल डेवलपमेण्ट ऑफ इण्डियन म्यूजिक।
17.प्रो. पी.साम्बमूर्ति, श्रुति वाद्याज़ अपेन्डिक्स–1, पृष्ठ संख्या 29–31।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,
We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net